THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 2 April- June: 2026

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवनपर्यन्त सीखने पर आशावादी व निराशावादी अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन

सुप्रीति चावला
शोधकर्त्री
टांटिया विश्वविद्यालय
श्रीगंगानगर, राजस्थान

डॉ. प्रीति ग्रोवर
शोध निर्देशिका (प्रोफेसर)
टांटिया विश्वविद्यालय
श्रीगंगानगर, राजस्थान

वर्तमान शोध में शोधकर्त्री ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवनपर्यन्त सीखने पर आशावादी व निराशावादी अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन किया है। न्यादर्श के रूप में 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। जिसमें श्रीगंगानगर जिले तक सीमित रखा गया है। जिसमें 300 ग्रामीण विद्यार्थी व 300 शहरी विद्यार्थियों को लिया गया है। इस शोध के लिये सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के एकत्रीकरण के लिये मानकीकृत उपकरण का उपयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय विधियों के रूप में मध्यमान, मानक विचलन, टी–मूल्य एवं सह–सम्बन्ध का प्रयोग किया गया है। विश्लेषण में पाया गया है कि सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की जीवनपर्यन्त सीखने और आशावादी व निराशावादी अभिवृत्ति सार्थक अंतर नहीं है। आशावादी विद्यार्थियों में जीवनपर्यन्त सीखने की इच्छा ज्यादा थी जबकि निराशावादी विद्यार्थियों की सीखने की इच्छा कम थी। दोनों चरों के मध्य पाया गया कि सहसम्बन्ध सांख्यिकीय दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जैसे–जैसे जीवनपर्यन्त शिक्षण का स्तर बढ़ता है वैसे–वैसे व्यक्तियों में आशावाद की प्रवृत्ति बढ़ती है तथा निराशावाद में कमी आती है।

प्रस्तावना :–

आशावादी और निराशावादी दृष्टिकोण पर दो विपरीत मानसिकताएँ हैं जो हमारे जीवन को आकार देती हैं। आशावादी दृष्टिकोण एक सकारात्मक और आशावादी मानसिकता है, जबकि निराशावादी दृष्टिकोण एक निराशावादी व नकारात्मक मानसिकता है। आजीवन सीखने का तात्पर्य स्कूल पूर्व वर्षो से लेकर सेवानिवृत्ति के बाद तक सभी प्रकार की क्षमताओं, रूचियों, ज्ञान व योग्यताओं को अर्जित करना व उन्हें अद्यतन करना है जो ज्ञान व क्षमताओं के विकास को बढ़ावा देता है, जिससे ज्ञान आधारित समाज के साथ अनुकूलन सम्भव होगा व साथ ही सभी प्रकार की शिक्षा को महत्व दिया जा सकेगा। एक आशावादी दृष्टिकोण आमतौर पर छात्रों में लचीलापन, प्रेरणा व चुनौतियों पर काबू पाने की उनकी क्षमता में विश्वास को बढ़ावा देकर आजीवन सीखने को बढ़ावा देता है, जबकि एक निराशावादी दृष्टिकोण नकारात्मकता, आत्मसंदेह व दृढ़ता की कमी को बढ़ावा देकर सीखने में बाधा डाल सकता है।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 2 April- June: 2026

अध्ययन का महत्व :–

आज के समय में असफलताओं से ग्रस्त विद्यार्थी जल्दी ही निराश हो जाते हैं। विद्यार्थियों की निराशावादी अभिवृत्ति उनकी जीवनपर्यन्त सीखने की इच्छा को भी कम कर देती है। अगर एक बार विद्यार्थी की अभिवृत्ति निराशावादी हो जाती है तो उनकी प्रसन्नता का स्तर भी गिर जाता है। दूसरी ओर सफलता से प्रेरित होने वाले विद्यार्थियों में आशावादी दृष्टिकोण का उदय होता है उनमें सकारात्मकता आ जाती है और उनकी प्रसन्नता का स्तर भी बढ़ जाता है।

बहुत से लोग रोजमर्रा की समस्याओं से हार जाते हैं। वे संघर्ष करते हैं शायद जीत भी जाते हैं जीवन के दौरान उन्हें जो 'बुरा ब्रेक' मिलता है, उस पर एक नीरस नाराजगी की भावना के साथ रहते हैं। उनमें कुछ सीखने की इच्छा नहीं रहती। इस भावना को व निराशावादी अभिवृत्ति को दूर किया जा सकता है। सुखी, प्रसन्न व स्वस्थ जीवन जीने के लिए उचित दृष्टिकोण बहुत महत्वपूर्ण है। अतः यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों में उचित दृष्टिकोण का विकास हो। अगर उनमें सही दृष्टिकोण का विकास होगा तो वह जीवनपर्यन्त सीखने के लिए तत्पर रहेंगे व उनकी प्रसन्नता का स्तर भी उच्च स्तर पर पहुंचेगा क्योंकि उनमें आत्मसंतुष्टि भी होगी। शिक्षार्थी ने शोध के लिए यह विषय इसलिए चुना है ताकि पता लगाया जा सके कि आशावादी व निराशावादी अभिवृत्ति विद्यार्थियों के जीवनपर्यन्त सीखने व प्रसन्नता के स्तर में क्या प्रभाव डालती है।

समस्य कथन :–

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवनपर्यन्त सीखने पर आशावादी व निराशावादी अभिवृत्ति के प्रभाव का अध्ययन''

शोध के उद्देश्य :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवनपर्यन्त सीखने का लिंग, क्षेत्र विद्यालय के प्रकार के संदर्भ में अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आशावादी व निराशावादी अभिवृत्ति का क्षेत्र, लिंग व विद्यालय के प्रकार के संदर्भ में अध्ययन।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवनपर्यन्त सीखने और आशावादी व निराशावादी अभिवृत्ति के सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवनपर्यन्त सीखने का क्षेत्र के संदर्भ में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 2 April- June: 2026

2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आशावादी व निराशावादी अभिवृत्ति का क्षेत्र के प्रकार के संदर्भ में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवनपर्यन्त सीखने और आशावादी व निराशावादी अभिवृत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

शोध में प्रयुक्त विधि :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोध अध्ययन समस्या के उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु वर्णात्मक विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा। क्योंकि इस विधि से पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति की जा सतकी है।

उपकरण :–

1. आशावादी व निराशावादी स्तर मापनी – डी.एस. पराशर
2. जीवनपर्यन्त सीखना – पूर्वा जैन व सतीश सूर्यवंशी

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी–मूल्य
4. सहसम्बन्ध

तथ्यों का विश्लेषण :–

परिकल्पना संख्या 1 :–

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यार्थियों के जीवनपर्यन्त सीखने में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सारणी – 1

चर	कुल विद्यार्थी	Mean	S.D.	t-Value	सार्थकता का स्तर	
					.05	.01
सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी	300	116.79	12.13	1.25	स्वीकृत	स्वीकृत
गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी	300	118.04	12.46			

प्रस्तुत तालिका में सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की जीवनपर्यन्त सीखने से सम्बन्धित आंकड़ों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 2 April- June: 2026

है। अध्ययन में कुल 600 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है। सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान 116.79 व मानक विचलन 12.13 पाया गया, जबकि गैर–सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 118.04 एवं मानक विचलन 12.46 रहा। दोनों समूहों की सार्थकता जांचने हेतु टी–परीक्षण किया गया, जिसका प्राप्त टी–मान 0.627 है। प्राप्त टी–मान टेबल की टी–मूल्य से कम है। अतः सरकारी एव गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की जीवनपर्यन्त सीखने की प्रवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पन 2 :–

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यार्थियों की आशावादी व निराशावादी अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

सारणी – 2

चर	कुल विद्यार्थी	Mean	S.D.	t-Value	सार्थकता का स्तर	
					.05	.01
सरकारी विद्यार्थी	300	30.86	7.11	0.85	स्वीकृत	स्वीकृत
गैर सरकारी विद्यार्थी	300	31.38	7.67			

प्रस्तुत तालिका में सरकारी विद्यार्थियों एवं गैर–सरकारी विद्यार्थियों के आशावाद–निराशावाद स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। आंकड़ों के अनुसार सरकारी विद्यार्थियों व गैर–सरकारी विद्यार्थियों का मध्यमान 30.86 व 31.38 पाया गया, जिससे दोनों समूहों के औसत स्तर में अत्यन्त अंतर परिलक्षित होता है। मानक विचलन के मान क्रमशः 7.11 व 7.67 है, जो दोनों समूहों में अंकों के प्रसार को दर्शाते हैं। माध्याकों के अंतर की सांख्यिकीय सार्थकता की जांच हेतु टी–परीक्षण किया गया, जिसमें टी–मान 0.85 प्राप्त हुआ। यह टी–मान 0.65 एवं 0.01 दोनों स्तरों पर असार्थक पाया गया। अतः निष्कर्ष निकाला जाता है कि सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यार्थियों के आशावाद निराशावाद स्तर में महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

परिकल्पना संख्या 3

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवनपर्यन्त सीखने व आशावादी व निराशावादी अभिवृत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

सारणी 3

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 2 April- June: 2026

चर	कुल विद्यार्थी	Mean	S.D.	r	उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध
जीवनपर्यन्त सीखना	600	117.42	12.29	0.95	
आशावादी व निराशावादी	600	30.12	7.39		

जीवनपर्यन्त शिक्षण तथा आशावाद–निराशावाद के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करने के लिए सहसम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया। जीवनपर्यन्त शिक्षण चर व आशावाद–निराशावाद चर का मध्यमान 117.42 व 30.12 तथा मानक विचलन 12.29 व 7.39 प्राप्त हुआ। दोनों चरों के मध्य प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.95 है। प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक का मान अत्यधिक उच्च एवं धनात्मक है जो यह दर्शाता है कि जीवन पर्यन्त शिक्षण और आशावाद–निराशावाद के मध्य अत्यन्त प्रबल सकारात्मक सहसम्बन्ध विद्यमान है। इसका आशय यह है कि जैसे–जैसे जीवनपर्यन्त शिक्षण का स्तर बढ़ता है वैसे–वैसे व्यक्तियों में आशावाद की प्रवृति बढ़ती है तथा निराशावाद में कमी आती है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि दोनों चरों के मध्य पाया गया सहसम्बन्ध सांख्यिकीय दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है तथा शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष :–

परिकल्पना 1 :–

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यार्थियों के जीवनपर्यन्त सीखने में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

निष्कर्ष :–

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यार्थियों के जीवनपर्यन्त सीखने में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। प्राप्त टी–मूल्य सारणीबद्ध टी–मूल्य से कम थी, अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की गई।

परिकल्पना 2 :–

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यार्थियों की आशावादी व निराशावादी अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

निष्कर्ष :–

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 2 April- June: 2026

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर–सरकारी विद्यार्थियों की आशावादी व निराशावादी अभिवृत्ति में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है।

परिकल्पना 3 :–

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवनपर्यन्त सीखने व आशावादी व निराशावादी अभिवृत्ति में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

निष्कर्ष :–

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवनपर्यन्त सीखने तथा आशावादी व निराशावादी अभिवृत्ति में सहसम्बन्ध ज्ञात किया गया। निष्कर्ष में निकाला गया की जीवनपर्यन्त सीखने तथा आशावादी व निराशावादी अभिवृत्ति में धनात्मक सहसम्बन्ध है। अतः परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है व कहा जाता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जीवनपर्यन्त सीखने तथा आशावादी व निराशावादी अभिवृत्ति में सहसम्बन्ध पाया जाता है।

शैक्षिक उपयोगिता :–

आशावादिता से छात्रों में आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच व कठिनाईयों का सामना करने की शक्ति बढ़ेगी। निराशावादी छात्रों की पहचान कर उनके लिए काउंसलिंग व मेटरिंग कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं। जीवनपर्यन्त अधिगम का दृष्टिकोण छात्रों के केवल परीक्षा केन्द्रित शिक्षा से आगे बढ़कर सतत् अधिगम व कौशल विकास की ओर प्रेरित करेगा।

शोध के निष्कर्ष शिक्षकों को यह समझने में मदद करेगी कि आशावादी व निराशावादी छात्रों की सीखने की शैली व भावनात्मक आवश्यकताएँ अलग–अलग होती हैं। शिक्षक सकारात्मक प्रोत्साहन, जीवन कौशल व तनाव प्रबंधन तकनीकों को अपनाकर कक्षा को अधिक अनुकूल व सहयोगी बना सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. कौर (2001) – ए स्टडी ऑफ ओप्टीमीस्टीक एटीट्यूट इन रिलेशन टू ईमोशनल मैच्यूरिटी अमांग हाई स्कूल स्टूडेण्टस ऑफ इंगलिश एण्ड नॉन इंगलिश मीडियम स्कूलस, एम.एड. डेजरटेशन, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंण्डीगढ़

2. अहमद एम. महारने (2013) – रिलेशनशीप बीटवीन आप्टीमीस्म – पैसीमिस्म एण्ड पर्सनेलिटी ट्रेटस अमॉग स्टूडेण्टस इन द हैरोमाइट यूनिवर्सिटी, इंटरनैशल एजूकेशन स्टडीस, वॉल्यम 6, नं. 8

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 2 April- June: 2026

3. अल मशन ओ.एस. (2000) – ओप्टीमिस्म एण्ड पैसीमिस्म एण्ड दयर रिलेशनशीप टू द साइकोलोजिकल एण्ड फीजिकल डिसआर्डर एण्ड लाइफ इवैंट प्रेशर विद द यूनिवर्सिटी स्टूडेण्ट, साइकोलॉजिकल स्टडीज 16, 505–532

4. बाराकल जैड (1998) – ओप्टीमिस्म एण्ड पैसीमिस्म साइकोलॉजी एण्ड दयर रिलेशनशीप टू सर्टेन स्टूडेण्ट रिलेटड वेरिबल, साइकोमैटरिक एण्ड एजूकेशनल जर्नल, 55–76